विचार बिन्दु

स्वयं प्रकाशित दीप को भी प्रकाश के लिए तेल और बत्ती का जतन करना पड़ता है बुद्धिमान भी अपने विकास के लिए निरंतर यत्न करते हैं। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है। –शुक्रनीति

दूरगामी सोच का परिणाम है वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान

जल है तो कल है कि चुनौती के बीच राजस्थान की भजन लाल सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में मानसून से पूर्व 5 जून से 20 जून तक वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, दादरा-नगर हवेली और दमन दीव देष के ऐसे राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश है जहां भूजल की निकासी भूजल के पुनर्भरण से कहीं अधिक हो रही है। अगर राजस्थान ही की बात करें और वह भी शुद्ध पेयजल की बात की जाए तो पीने योग्य पानी और उसकी उपलब्धता में 30 फीसदी का अंतर है। 30 प्रतिशत का अंतर कोई छोटा-मोटा अंतर नहीं है ऐसे में इसे भलीभांति समझा जा सकता है कि राज्य सरकार को नागरिकों के लिए पीने के शुद्ध पानी की उपलब्धता बनाये रखने की चुनौती से कैसे दो-चार होना पड़ता होगा। वास्तव में यह गंभीर समस्या है। समूचे विश्व में पानी की उपलब्धता का संकट है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 1950 में जहां प्रतिव्यक्ति सालाना 5200 घनमीटर पानी की उपलब्धता थी वह 2024 आते आते 1401 घनमीटर रह गई है और यदि विशेषज्ञों की माने तो 2050 तक यह उपलब्धता 1191 घनमीटर ही रह जाने की संभावना हो गई है। यही कारण है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों कहा कि हमें पानी के उपयोग के संदर्भ में कम करें, पुन: उपयोग करें और पुन: चक्रित करने की नीति पर चलना होगा। देश में जल के पुनर्भरण में लगातार कमी आ रही है। प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में आज भारत 182वें स्थान पर आ गया है। भूजल की उपलब्धता को देखा जाए तो 1950 से 2024 के दौरान 73 प्रतिशत की कमी आ गई है। दिल्ली, चैन्नई, पुणे, हैदराबाद, मुंबई सहित देश के अनेक छोटे-बड़े शहर पेयजल की गंभीर समस्या से जुझ रहे हैं।

विश्वव्यापी जल संकट को देखते हुए राजस्थान की भजन लाल सरकार की इस पहल को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। दरअसल देश में उपलब्ध भूजल का 87 प्रतिशत उपयोग खेती किसानी में होता है तो 11.7 प्रतिशत उपयोग घरेलू कार्यों और लगभग 2 प्रतिशत उपयोग ही औद्योगिक क्षेत्र में होता है। संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्त्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है। सीवेज के कारण पानी का अत्यधिक उपयोग, बरसाती जल का प्रोपर संग्रहण नहीं होना, जंगलों का कक्रिट के जंगलों में बदलना और पानी के अन्य कार्यों में भी अत्यधिक उपयोग से पानी का संकट दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनियमित बरसात और बरसाती चक्र में बदलाव को भी एक कारण माना जा सकता है। आज जितने पानी के पीने के लिए आवश्यकता होती है उससे कई गुणा अधिक पानी फ्लस करने, वाहनों की धुलाई, पौधों के रखरखाव व अन्य कार्यों में होने लगा है। सीमेंट, लोहा, जस्ता और अब एमसेंड आदि उद्योगों के लिए भी अधिक पानी की आवश्यकता होने लगी है। एक समय था जब सावन भादों में बरसात की झड़ी लगती थी और कई दिनों तक सूर्य देवता के दर्शन नहीं होते थे तो उस झड़ी का पानी सीधे जमीन में जाता था और वह प्राकृतिक वाटर हार्वेस्टिंग का सिस्टम होता था। सड़कों के साथ-साथ ढलान क्षेत्र होता था और वहां एकत्रित पानी क्षेत्र में जल स्तर बढ़ाने के साथ ही पशुओं के पीने के काम भी आ जाता था। राजस्थान में रेगिस्तानी इलाकों में टांके आदि परंपरागत जल संग्रहण के साधन होते थे आज हम इन्हें भूलते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि गिरते भूजल स्तर और जल संग्रहण को लेकर सरकार गंभीर ना हो। बल्कि कहना तो यह होगा कि सरकार अत्यधिक गंभीर होने के बावजूद जो परिणाम आने चाहिए वह प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसका एक प्रमुख कारण दूरगामी सोच के साथ नीति और क्रियान्वयन का ना होना भी है। सरकार द्वारा वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सरकार स्तर पर बड़े स्तर पर बनाने और निजी मल्टी स्टोरिज व सरकार गैरसरकारी संस्थानों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने पर जोर और बनाये जाने के बावजूद उनकी गुणवत्ता को लेकर सवाल इसलिए उठते रहते हैं कि ना तो रखरखाव पर ध्यान दिया जाता है और ना ही पानी के बहाव का पूरा ध्यान देने के कारण यह अपने उद्देश्यों पर खरे नहीं उतरे हैं।

संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्त्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है। सीवेज के कारण पानी का अत्यधिक उपयोग, बरसाती जल का प्रोपर संग्रहण नहीं होना, जंगलों का कक्रिट के जंगलों में बदलना और पानी के अन्य कार्यों में भी अत्यधिक उपयोग से पानी का संकट दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि इन हालातों से सरकार अनजान हो यहीं कारण है कि राजस्थान की भजन लाल सरकार ने मानसून के ठीक पहले पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से 20 जून तक समूचे प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर रही है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस अभियान में जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया है और स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक प्रमुख समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका की मुहिम पर रामगढ़ में श्रमदान में हिस्सा लेकर आमजन को संदेश दिया है। राज्य सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अभियान के दौरान जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल प्रदूषण में कमी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता, भूजल पुनर्भरण, व्यवहार परिवर्तन से बेहतर जल उपयोग और व्यापक स्तर पर पौधारोपण के हरियालो राजस्थान की तैयारी आरंभ की है। रामगढ़ राजस्थान की राजधानी जयपुर की किसी जमाने में पेयजल की उपलब्धता के लिए जीवन रेखा माना जाता था और 1982 के एशियाड की नौकायन प्रतियोगिता के बाद इसके बहाव क्षेत्र में अतिक्रमणों का जो ग्रहण लगा वह इसे सूखे मैदान में बदल कर रख दिया है। पिछले लंबे समय से रामगढ़ को पुनर्जीवित करने की मुहिम चल रही है लगता है सरकार ने यहां वैकल्पिक स्त्रोत से पानी लाने की जो योजना बनाई है और समग्र प्रयासों से परंपरागत पानी के अवरुद्ध रास्ते चलने लगते हैं तो रामगढ़ को नया जीवन मिल सकेगा। रामगढ़ तो एक उदाहरण मात्र है देश व प्रदेश में ऐसे हजारों की संख्या में जल संग्रहण स्त्रोत है जो अतिक्रमणों व शहरीकरण की भेंट चढ़ रहे हैं। शहरीकरण के विस्तार के समय यदि परंपरागत जल बहाव क्षेत्रों से छेड़छाड़ नहीं की जाए तो हालात इतने अधिक नहीं बिगड़े, पर पैसा कमाने का लालच हमारें आने वाली पीढ़ी के लिए संकट लाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने पाणी रो मान राखो-जीवण रो ध्यान राखो समयानुकूल संदेश दिया है। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि सभी मंत्रियों और प्रभारी सचिवों को इस कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्वयं मुख्यमंत्री श्रमदान कर रहे हैं। निश्चित रुप से इससे अवेयरनेस तो आयेगी ही जनभागीदारी भी बढ़ेगी। देश के सभी राज्यों में इस तरह के अभियान चलाये जाने चाहिए। भले ही आज कुछ राज्यों में पानी का संकट दिखाई नहीं दे रहा हो पर पानी की बचत और भूजल के संग्रहण के प्रति हमें गंभीर होना ही होगा। पानी के पुन: उपयोग और पेयजल के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए पुन:चक्रिकृत पानी के उपयोग को आदत बनाना होगा। हांलाकि पानी के पुन: चक्रिकरण के लिए अभी व्यापक स्तर पर काम करने की आवश्यकता है। सरकार को प्राथमिकता से एसटीपी बनाने होंगे और इस तरह के पानी का उपयोग बढ़ाना ही होगा। भूजल के संग्रहण और भूजल के दोहन के बीच समन्वय बनाना होगा नहीं तो आने वाला समय बहुत अधिक चिंतनीय और गंभीर होगा, इसमें किसी तरह का संदेह नहीं होना चाहिए। सही मायने में कहा जाए तो वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान सरकार की दूरगामी सोच का जनहितेषी कार्यक्रम माना जाना चाहिए क्योंकि सरकार की समझ और गंभीरता को इसीसे से समझा जा सकता है कि कार्यक्रम को आमजन से जोड़ने के लिए ही जनअभियान नाम दिया गया है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

जन आंदोलन बनाने के लिए जन भागीदारी जरूरी : राजस्थान में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान का आग़ाज़

बाल मुकुन्द ओझा

राजस्थान में पेयजल और घरेलू आपूर्ति के लिए 70 फीसदी भूमिगत जल पर ही निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन अब भूमिगत जल भी खतरनाक स्तर तक नीचे चला गया है। इस समस्या के समाधान के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान का आग़ाज़ किया है। यह अभियान प्रदेशभर में 5 से 20 जून तक चलाया जायेगा। अभियान के अंतर्गत जल संचय संरचनाओं का निर्माण, जल स्त्रोतों की साफ-सफाई, परंपरागत जलाशयों का पुनरूद्धार, पर्यावरण व जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित होंगी। जल संरक्षण का यह अपनी तरह का सबसे बड़ा अभियान है। राजस्थान को जल के क्षेत्र में आत्मनिर्भर और हरा-भरा बनाने के लिए बने इस अभियान को जन आंदोलन के रूप में चलाया जायेगा। इस अभियान के तहत नए जल संग्रहण एवं जल संरक्षण संरचनाओं के कार्यों का शुभारंभ किया जाएगा। इन कार्यों के साथ ही बारिश में व्यर्थ बहकर जाने वाले पानी को रोकने के लिए बांध, ऐनिकट तथा नहरों की मरम्मत का कार्य प्राथमिकता से किया जाएगा, जिससे मानसून में बारिश के पानी का संग्रहण तथा भूजल स्तर में वृद्धि हो सके। मुख्य मंत्री भजन लाल शर्मा के मुताबिक अभियान के पहले दिन प्रदेश के गांवों में जल संरक्षण के कम से कम एक कार्य की शुरूआत की जाए। उन्होंने कहा कि ग्राम सभाओं की बैठकों में भी इस अभियान को विशेष महत्व देते हुए जल संरक्षण से संबंधित कार्यों की रूपरेखा तैयार की जाए।

मुख्यमंत्री की दूरगामी सोच और बारिश के जल की एक-एक बूंद को सहज कर भूमि में समाहित करने की यह परिकल्पना सरकार के साथ नागरिकों और स्वयं सेवी संस्थाओं के सहयोग से पूर्ण हो सकती है इसीलिए इसे जन आंदोलन के रूप में चलाने की मंशा जाहिर की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जल संग्रहण संरचनाओं एवं जलाशयों की साफ-सफाई के कार्यों में स्वयं सेवी संस्थाओं, राजकीय कर्मचारियों सहित अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर श्रमदान कराया जाए। जिला स्तर पर हर दिन अलग-अलग विभागों द्वारा संयुक्त श्रमदान कराया जाए। साथ ही, सरकारी कार्यालयों में जल संरक्षण के संबंध में संकल्प कार्यक्रम आयोजित कराए जाएं। अभियान में सराहनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों तथा संस्थाओं का सम्मान भी किया जाए। आजादी के बाद से ही मरुस्थलीय क्षेत्र राजस्थान पेयजल के संकट से जूझता रहा है। पहले लोग कुए, तालाब और बावड़ियों के पानी पर निर्भर थे। आबादी बढ़ने के साथ पानी की मांग भी बढ़ने लगी। जलप्रदाय की अनेक योजनाएं बनी मगर पानी का संकट कम होने के बजाय बढ़ता ही गया। परम्परागत श्रोत सूख गए और जल प्रदाय योजनाओं के नए केंद्र बनने शुरू हुए। हर साल करोड़ों अरबों की राशि इन कार्यों पर खर्च होने के बाद भी प्रदेश में पेयजल की किल्लत से हम जूझ रहे है। जल जीवन की पहली प्राथमिकता है। देश इस समय भीषण जल संकट से गुजर रहा है और इस आसन्न संकट पर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हालत बदतर होने की सम्भावना है। देश के करीब 60 करोड़ लोग पानी की कमी का सामना कर रहे हैं। करीब 75 प्रतिशत घरों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। साफ और सुरक्षित पानी नहीं मिलने की वजह से हर साल करीब दो लाख लोगों की मौत होती है। पृथ्वी पर कुल जल का अढ़ाई प्रतिशत भाग ही पीने के योग्य है। इनमें से 89 प्रतिशत पानी कृषि कार्यों एवं 6 प्रतिशत पानी उद्योग कार्यों पर खर्च हो जाता है। शेष 5 प्रतिशत पानी ही पेयजल पर खर्च होता है। यही जल हमारी जिन्दगानी को संवारता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम जल के महत्व को समझे और एक-एक बूंद पानी का संरक्षण करें तभी प्यास बुझाई जा सकेगी।

जल समस्या का एक समाधान जल संचयन है। यहाँ सवाल यह उत्पन्न होता है की भारी मात्रा में मानसूनी जल उपलब्ध होने के बावजूद हम जल संकट सामना क्यों कर कर रहे है। इसका जवाब है हमने अपने परंरागत जल श्रोत समाप्त कर दिए। राजस्थान को कुए, बावड़ी टांकों और तालाबों का प्रदेश कहा जाता है। यहाँ लाखों की संख्या में परंपरागत जल श्रोत थे। नदियां हर समय पानी से लबालब भरी होती थी। इसके बावजूद हम जल समस्या का सामना कर रहे है। यह समस्या हर साल गहराती जा रही है। खेत तो दूर की बात पीने को भी पानी नहीं मिल रहा है। हमारे देश और प्रदेश में हर साल मानसून में बहुत सा पानी व्यर्थ बह जाता है जिसके संचयन की कारगर व्यवस्था अब तक नहीं खोजी जा सकी है। साल भर में होने वाली बारिश का कम से कम 31 प्रतिशत पानी धरती के भीतर रिचार्ज के लिए जाना चाहिए। जब की केवल 13 प्रतिशत पानी ही धरती में समाता है। रिचार्ज नहीं होने की वजह से भूगर्भ में पानी की कमी हो जाती है और उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ता है।

हमारे देश में सूखा और बाढ़ की अजब गजब स्थिति है। देश के किसी भाग में सूखा तो किसी में बाढ़ अक्सर हम देखते है। भारत सरकार द्वारा कैच द रैन कार्यक्रम के तहत वर्षा जल संचयन अभियान देश भर में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में चलाया जा रहा है और इसका नारा है जहां भी गिरे और जब भी गिरे, वर्षा का पानी इकट्ठा करें। नीति आयोग के अनुसार, रेनवॉटर हार्वेस्टिंग को जल संरक्षण और भूजल को रिचार्ज करने का एक सरल, व्यवहारिक और पर्यावरण के अनुकूल तरीका माना जाता है। ऐसे में देश के कई राज्यों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्य बना दिया गया है। शहरी विकास मंत्रलय के मुताबिक प्रति 100 स्क्वायर मीटर क्षेत्र की छत से हर साल 55,000 लीटर तक जल का संरक्षण किया जा सकता है।

राजस्थान में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की सफलता आम आदमी के सहयोग पर निर्भर करती है। यह अभियान केवल सरकारी अभियान बनकर नहीं रह जाये, इसके लिए मिलजुलकर प्रयास करने होंगे। इसके लिए सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे। है। आम आदमी को जल संरक्षण एवं समझाइश के माध्यम से पानी की बचत का सन्देश देना होगा। वर्षा की अनियमितता और भूजल दोहन के कारण भी पेयजल संकट का सामना करना पड़ रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम जल के महत्व को समझे और एक-एक बूंद पानी का संरक्षण करें तभी लोगों की प्यास बुझाई जा सकेगी।

– बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

प्रधानमंत्री जी का राम-राम : राजस्थानी भाषा की मान्यता का सकारात्मक संकेत हो सकता है

राजेन्द्र जोशी

राजस्थानी भाषा को मान्यता मिलने की उम्मीद बढ़ी है। पिछले दिनों देशनोक-पलाना में प्रधानमंत्री जी के आगमन के बाद राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किए जाने की उम्मीद की जा सकती है। करणी माता के जय घोष और पलाना की आमसभा का शंखनाद 'था सगळा नैं रामराम' से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया।

वहां उपस्थित सभी श्रोताओं ने उनकी इसका प्रति उत्तर जोश और उत्साह से दिया। इसके मायने स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री जी राजस्थानियों और उनकी भाषा को प्यार करते हैं।

अपनी बात को राजस्थानी भाषा से प्रारंभ करके उन्होंने स्पष्ट संकेत दे दिया की राजस्थान के नेता अगर उनको राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के उत्थान के लिए सिस्टमैटिक तरीके से बताएं तो वह राजस्थानी भाषा को मान-सम्मान देने के लिए तत्पर है। वे जब भी राजस्थान आते है, हमेशा यहां के स्थानीय देवी-देवताओं की जय जयकार करते हैं। और अपनी बात राजस्थानी भाषा में प्रारंभ करने से कभी भी भूलते नहीं। प्रधानमंत्री जी यह भी जानते हैं कि राजस्थानी और गुजराती बहुत समीप हैं, ऐसे में गुजराती को मान्यता मिली हुई है तो राजस्थानी भाषा को भी मान्यता दी जा सकती हैं। दुख तो तब हुआ जब राजस्थान के एक भी नेता ने प्रधानमंत्री जी को राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु आग्रह भी नहीं किया। प्रधानमंत्री जी राजस्थानी की बात करना चाहते हैं, अपनी बात का प्रारंभ राजस्थानी के महत्वपूर्ण शब्द 'था सगळा ने राम-राम' से किया। प्रधानमंत्री जी की भावना को हमें समझना चाहिए, उन्होंने वैसा ही किया जैसा साहित्य अकादेमी दिल्ली में विभिन्न भाषाओं के साहित्यकार अपनी-अपनी भाषाओं में प्रस्तुति देते हैं, वहां भी सबसे पहले वह एक शब्द या एक लाइन अपनी भाषा में कहते हैं उसके बाद हिंदी अथवा अंग्रेजी में अपनी प्रस्तुति दिया करते हैं। ठीक उसी प्रकार प्रधानमंत्री जी ने राजस्थानी भाषा से अपनी बात प्रारंभ की। अब प्रधानमंत्री जी को स्थानीय नेतागण राजस्थान के लोगों की भावना से अवगत कराए।

राजस्थान के नेताओं का वर्चस्व केंद्र की राजनीति में सर्वाधिक हैं। राजस्थान के नेताओं को समझना चाहिए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजस्थान के लोगों पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। केंद्र सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर राजस्थान के लोगों को बिठाया हुआ हैं। और तो और अब भारतीय रिजर्व बैंक भी राजस्थानी के भरोसे कर दी। इतने भरोसेमंद लोगों की भाषा को मान्यता नहीं होना वहां की संस्कृति के साथ खिलवाड़ है। दिल्ली में बैठे राजस्थान के नेतागण आरबीआई के गवर्नर को साथ लेकर प्रधानमंत्री जी से मुलाकात कर उनसे अपनी प्रदेश की भाषा को मान्यता देने का आग्रह करें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह सकारात्मक निर्णय लेंगे। प्रधानमंत्री जी को बताना चाहिए कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्थानीय भाषाओं को महत्व दिया गया हैं। और फिर राजस्थान की संस्कृति का समृद्ध भंडार है, जो हजारों वर्षों में विकसित हुई है, यहां की कला, साहित्यिक कृतियां, प्रथाओं, परंपराओं, भाषाई अभिव्यक्तियां, कलाकृतियां, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के बारे में विस्तार से प्रधानमंत्री जी को बताना चाहिए। प्रधानमंत्रीजी जानते हैं कि उन्होंने राम-राम केवल उपस्थित लोगों को ही नहीं कर रहे, बल्कि दुनिया भर में बैठे मारवाड़ी मित्रों को भी राम-राम कर रहा हूँ। जब भी विदेश जाते हैं तो वहां उनको हमेशा राजस्थानी लोग जरूर मिलते हैं, ऐसे में प्रधानमंत्री जी को देशनोक करणी माता जी के आशीर्वाद से राजस्थान की भाषा साहित्य एवं संस्कृति के बारे में विस्तार से परिचित कराएंगे तो निश्चित रूप से उनका दिया हुआ राम-राम राजस्थानी भाषा की मान्यता में तब्दील होगा। पिछले लंबे समय से केंद्र सरकार तक राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए विधिवत रूप से कोई मांग रखी ही नहीं जा रही है, मैं अनेक बार समाचार पत्रों के माध्यम से यह आग्रह करता रहा हूं कि हमारे प्रदेश के 35 सांसद एक साथ प्रधानमंत्री जी को आग्रह करें तो प्रधानमंत्री जी राजस्थानी भाषा को मान्यता देने का विचार अवश्य करेंगे आखिर यह जिम्मेदारी किसकी है।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

भक्ति संगीत की दुनिया में स्वर साधक पंडित ओम व्यास ने अलग मुकाम बनाया

- **ओम व्यास ने सुप्रसिद्ध गीतकार पंडित भरत व्यास की छत्रछाया में स्वरसाधना की शुरुआत की थी**
- **उम्मीद जताई जा रही है कि संभवतः भारत सरकार भी उन्हें जल्द ही पद्मश्री से पुरस्कृत कर सकती है**

डीडवाना, (नि.सं.)। कहा जाता है कि संगीत और कला सरहदों के परे होते हैं। संगीत व कला के फनकारों की कला के दीवाने किसी एक स्थान या क्षेत्र तक ही सीमित नहीं होते, बल्कि वह पूरे जग में फैले होते हैं। ऐसे फनकारों के जब करोड़ों लोगों को दीवाने बनते हैं तो उसके पीछे उनकी वर्षों की मेहनत, लगन और समर्पण होता है, जिसके बदौलत वे बुलंदियों पर पहुंचते हैं। ऐसा ही एक नाम है, स्वर साधक पंडित ओम व्यास का, जिन्होंने अपनी स्वर साधना से भजनों की दुनिया में अपना एक अलग वर्चस्व कायम किया, बल्कि डीडवाना का भी नाम रोशन कर दिया।

गौरतलब है कि भारतीय गीत-संगीत में राजस्थानी स्वर, साधना और समर्पण का एक अनूठा इतिहास रहा है। देश की सांस्कृतिक परम्पराओं में राजस्थानी लोक गीतों का भी अभूतपूर्व योगदान रहा है। राणाकुंभा, हमीर हड़ग और मीरा की गायकी ने भारतीय संगीत को न केवल आध्यात्मिक स्वरुप दिया, बल्कि लोक चेतना की एक सशक्त परम्परा को भी स्थापित किया। उसी परंपरा के स्वरूप में राजस्थानी गीत-संगीत आज भी कायम है। उसी परंपरा में राजस्थान के डीडवाना की थार की धरती से निकले स्वरसाधक ओम व्यास आज भक्ति संगीत की दुनिया में एक जाना पहचाना नाम बन चुके है। बीते जमाने के सुप्रसिद्ध गीतकार पंडित भरत व्यास की छत्रछाया में व उनके पथ-प्रदर्शन में उन्होंने राजस्थानी गीतों के माध्यम से अपनी स्वरसाधना की शुरुआत की। आज यह साधना परवान चढ़ चुकी है। अपनी माता स्व. राधादेवी हरिशंकर व्यास के मुख से सुमधुर भजन सुन-सुन कर बचपन से ही इनमें संगीत गायन की जिज्ञासा जागृत हो गई थी। उस जमाने में जब हर कोई फिल्मों की चकाचौंध में अपना रुख फिल्मों की तरफ कर रहा था, तब इन्होंने अपनी अलग राह बनाई। भक्ति संगीत व लोक गीतों को अपनी एक अलग शैली और विशेष अंदाज में अपनाकर उसे जनमानस तक पहुंचाया। पंडित ओम

स्वर साधक पंडित ओम व्यास

व्यास की मधुर आवाज के लोग इतने दीवाने थे कि उनका प्रभाव फिल्मी दुनिया तक पहुंच गया। इसी कारण उन्हें फिल्मों में गाने और संगीत का मौका मिला। मगर एक-दो फिल्मों में काम और गीत गाने का मौका मिलने के बावजूद इनका मन और झुकाव भक्ति संगीत और भजनों पर ही रहा और फिर वे कभी फिल्मों के लिए गीत नहीं गा सके।

प्रख्यात संगीत कंपनी एच.एम.वी. (सारेगामा) द्वारा प्रस्तुत एल्बम "अर्चना" हिन्दी भजनों का कैसेट एवं पहला एल.पी. रिकॉर्ड है, जिसे ओम व्यास ने अपने सुरों से सजाया। यह एल्बम भक्ति गीतों में एक मील का पत्थर साबित हुआ। अर्चना इनका पहला एल.पी. रिकार्ड है, जो आज तक की ओम व्यास की गीत-संगीत यात्रा की ऐतिहासिक धरोहर है। यह संयोग है कि अर्चना भजन श्रृंखला के गीत स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि महाराज ने लिखे हैं, जिन्हें भारत सरकार ने पद्मभूषण से अलंकृत किया था। इसके अलावा दर्जनों भजन व भक्ति एल्बम से ओम व्यास ने जन जन में भक्ति भाव को जागृत किया। डीडवाना के बेटे ओम व्यास की इन उपलब्धियों और कामयाबी से उनके पैतृक शहर डीडवाना के लोग भी बेहद खुश और उत्साहित है। वहीं ओम व्यास भी संगीत की दुनिया में व्यस्त होने के बावजूद आज तक अपनी मिट्टी को नहीं भूले हैं। वे आज भी डीडवाना को याद करते हैं। उनका कहना है कि वह आज जिस मुकाम पर है उसके पीछे डीडवाना की धरती का ही कमाल है। आज भी ओम व्यास का डीडवाना से जुड़ाव है और वह समय-समय पर डीडवाना आते जाते हैं। पंडित ओम व्यास को भक्ति संगीत में विशेष योगदान और राजस्थानी लोक कला को बढ़ावा देने के उपलक्ष में अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा कई संस्थाएं भी उन्हें पुरस्कृत कर चुकी है। अब उम्मीद जताई जा रही है कि संभवतः भारत सरकार भी उन्हें जल्द ही पद्मश्री से पुरस्कृत कर सकती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 7 जून, 2025

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र प्रातः 9:40 तक, वारियान योग दिन 11:17 तक, बवकरण सायं 6:03 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-तुला, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 9:40 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 9:40 से सूर्योदय तक है। आज वन्जुलिनी महाद्वादशी व्रत, चंपक द्वादशी है। आज ईद उल जुहा (बकरीद) मु. है।

श्रेष्ठ चौघाड़िया: शुभ 7:18 से 9:01 तक, चर 12:25 से 2:08 तक, लाभ अमृत 2:08 से 5:32 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:14

मेष
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। कमर दर्द के कारण परेशानी हो सकती है।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।